- जब्ती व्यवस्था के तहत बोए गए क्षेत्र को लोहे के छल्लों से जुड़े बांस के लट्ठे से मापा जाता था। जब्ती व्यवस्था मूल रूप से राजा टोडरमल से संबंधित थी इसलिए इसे कभी-कभी **टोडरमल बंदोबस्त** भी कहा जाता है। **इसलिए कथन 3 सही है।**

- अकबर द्वारा स्थापित दहसाला व्यवस्था के अंतर्गत विभिन्न फसलों की औसत उपज के साथ-साथ पिछले दस वर्षों की औसत कीमतों की भी गणना की जाती थी और औसत उपज का एक-तिहाई भाग राज्य द्वारा कर के रूप में लिया जाता था। इस व्यवस्था को केवल साम्राज्य के प्रमुख प्रांतों में अपनाया गया था। इन प्रांतों में मुल्तान, दिल्ली, इलाहाबाद, अवध, आगरा तथा लाहौर शामिल थे। **इसलिए कथन 1 सही है।**
- राजा टोडरमल ने जब्ती व्यवस्था में सुधार किया था और इसे दहसाला व्यवस्था का नाम दिया था। इसलिए **दहसाला व्यवस्था, जब्ती व्यवस्था का एक उन्नत स्वरूप थी। इसलिए कथन 2 सही है।**

Q 19.C

- **भौतिकवादी दर्शन के प्रमुख प्रतिपादक चार्वाक थे। इस दर्शन को 'लोकायत' के नाम से जाना जाने लगा, जिसका अर्थ है आम लोगों से प्राप्त विचार। इसलिए विकल्प (c) सही उत्तर है।**
  - लोकायत में विश्व (लोक) के साथ अंतरंग संपर्क के महत्व को रेखांकित किया गया और परलोक में अविश्वास प्रदर्शित किया गया। लोकायत मत के अनेक सिद्धांतों का श्रेय चार्वाक को दिया जाता है। वे आध्यात्मिक मोक्ष की खोज के विरोधी थे। उन्होंने किसी भी दिव्य या अलौकिक सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने केवल उन्हीं वस्तुओं के अस्तित्व / वास्तविकता को स्वीकार किया जिन्हें मानव इंद्रियों एवं अंगों द्वारा अनुभव किया जा सकता है।
  - इसमें ब्रह्म और ईश्वर के अस्तित्व पर स्पष्ट रूप से अविश्वास दर्शाया गया है।
  - चार्वाक के अनुसार ब्राह्मणों ने अनुष्ठानों का सृजन उपहार (दक्षिणा) प्राप्त करने के उद्देश्य से किया है। चार्वाक को बदनाम करने के लिए उनके विरोधी उनके केवल एक ही सिद्धांत के बारे में चर्चा करते हैं।
  - इसके अनुसार व्यक्ति जब तक जीवित रहता है तब तक उसे सुख भोगना चाहिए ("यदा जीवेत सुखं जीवेत, ऋण कृत्वा, घृतं पीवेत" अर्थात "जब तक जियो सुख से जियो, उधार लेकर घी पियो"।) हालांकि, चार्वाक का वास्तविक योगदान उनके भौतिकवादी दृष्टिकोण में निहित है। वह दिव्य और अलौकिक सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं और मनुष्य को सभी गतिविधियों का केंद्र मानते हैं। **भौतिकवाद पर जोर देने वाले दार्शनिक संप्रदाय 500 ईसा पूर्व और 300 ईस्वी के बीच अर्थव्यवस्था और समाज के विस्तार की अवधि में विकसित हुए।**

Q 20.B

- बुद्ध की शिक्षाएं बौद्ध धर्म का केंद्र बिंदु हैं। बौद्ध धर्म **ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता है।** बौद्ध धर्म देहांतरण के विचार को स्वीकार करता है लेकिन **शाश्वत आत्मा के विचार को स्वीकार नहीं करता है।**
- बौद्ध धर्म **पुनर्जन्म के सिद्धांत में विश्वास करता है।** बौद्ध धर्म के अनुसार पुनर्जन्म किसी विशेष जीवन के कर्मों के संचयी परिणामों से निर्धारित होता है। कर्म का अर्थ है प्रयोजन, जो शरीर, वाणी या मन के कार्यों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। **इसलिए विकल्प (b) सही उत्तर है।**
  - बुद्ध ने पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति-केन्द्रित हस्तक्षेप और सम्यक कर्म पर जोर दिया।
- **बुद्ध की शिक्षा का परम लक्ष्य निर्वाण की प्राप्ति थी।** यह कोई स्थान नहीं बल्कि एक अनुभव था जिसे इसी जीवन में प्राप्त किया जा सकता है। निर्वाण का शाब्दिक अर्थ है विलोपित होना, मुक्ति पाना, या विलीन होना अर्थात इच्छा, मोह, लोभ, घृणा और अज्ञानता से मुक्ति पा लेना।

Q 21.B

- जैनियों ने भी हिंदुओं की तरह बड़े-बड़े मंदिर बनवाए। अनेक जैन मंदिर एवं तीर्थ स्थल पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़कर समस्त भारत में विभिन्न स्थानों पर पाए जाते हैं।
- कर्नाटक में जैन मंदिरों की समृद्ध धरोहर सुरक्षित है जिसमें **गोमतेश्वर में** ग्रेनाइट पत्थर की मूर्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। **श्रवणबेलगोला स्थित भगवान बाहुबली** की **विशाल मूर्ति,** जो अठारह मीटर (सत्तावन फीट) ऊंची है, एकाश्म पत्थर से निर्मित और बिना किसी सहारे के खड़ी विश्व की सबसे लंबी मूर्ति है। **इसलिए विकल्प (b) सही उत्तर है।**